वार्षिक मूल्य 50 रूपये

# धर्म जीवन

नवम्बर – 2023


- भगवान् देवात्मा फरमाते हैं
- सत्य धर्म बोध उत्सव
- निज का साधन करने की आवश्यकता
- ऐसे थे बाबा जी
- पवित्र आत्मा
- अपने आप का ज्ञान – 4
- मनुष्य जगत के साथ हमारा सम्बन्ध
- भगवान् देवात्मा का जन्मोत्सव निकट आ रहा है

# भगवान् देवात्मा फरमाते हैं

नीच घृणा भाव महा विनाशकारी है और मनुष्य के दिल को जला देने वाला है। दिल का जलना, कुढ़ना क्या है? यही कि दिल में नीच घृणा वर्तमान है जो औरों को फाड़ने का काम करती है। आजकल हिन्दुओं और मुसलमानों में जो फसाद हो रहा है, उसकी तह में और क्या बात है? यही नीच घृणा शक्ति कि जो कुश्तो खून करवा रही है, आपस में लड़ाई झगड़ा और मार पिटाई करा रही है।

नीच घृणा ज़हरे कातिल है। यह आत्मा का कुछ बनने नहीं देती। तुम्हारे भीतर बर्दाश्त करने की इतनी ताकत आनी चाहिए कि तुम दूसरों से बुरा सलूक पाकर भी उससे फट न जाओ बल्कि उसका भी भला करना चाहो। उसके लिए सच्ची हमदर्दी का भाव पैदा हो, तब दूसरे के दिल पर असर होता है और उसमें कुछ बेहतरी का सिलसिला आरम्भ होता है। वरना लफ़्ज़ों से दूसरे की जिन्दगी में शुभ परिवर्तन का कार्य आरम्भ नहीं होता। हम चाहते हैं कि तुम्हारे भीतर से यह नीच घृणा शक्ति नष्ट हो सके। यह फूंक मार देने से या सिर्फ मुंह से कह देने से नष्ट नहीं हो सकती, बल्कि तुम्हें अपने निज के साधन में प्रतिदिन ऐसे लेखों का पाठ करना चाहिए, जिनमें उसकी नीच घृणा की घृणित और महा हानिकारक छवि तुम्हारे सामने आये।

इसी प्रकार से ही यूं तो सब नीच अनुराग और घृणाएं आत्मा के लिए हानिकारक हैं, परन्तु जो नीच अनुराग आत्मिक कोढ़ का काम करता है, वह अहं का महा हानिकारक रोग है। उससे उत्पन्न घमंड और नीच घृणा सचमुच ही एक एक कोढ़ी की न्याईं उसके आत्मिक अंगों को झुलसाने का काम करते हैं। ऐसा अभागा जन औरों के सच्चे या झूठे अवगुणों का औरों के पास प्रकाश करके विष खाने और औरों के भीतर भी विष संचार करने का काम करता है।

- देव वाणी के नोट

## सूचना

*हमारे परम पूजनीय भगवान देवात्मा सत्गुरू का 173 वां शुभ जन्म दिन 25, 26, 27, 28, दिसम्बर, 2023 को बहुत चावभाव से देवआश्रम (डेराबस्सी के निकट) मनाया जाएगा। 27 दिसम्बर को विशेष दिन पर हमारे गुरू का शुभ जन्म दिन है। 27 नवम्बर को आरम्भिक दिन है। जिसके विषय में लिखा जा चुका है। हम सबको बाहर की तैयारी के साथ साथ अपने हृदयों को भी पूरी तरह से तैयार करना चाहिए। आप सब से यही प्रार्थना है कि महोत्सव में शामिल होना चाहिए क्योंकि यह हमारी प्रतिज्ञा में भी शामिल हैं।*

*- देव समाज (G) के प्रबन्ध की ओर से*

# धर्म जीवन

खण्ड 34 अंक 10
नवम्बर – 2023
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना


## सत्य धर्म बोध उत्सव

सत्य धर्म बोध उत्सव देव समाज (Global) के अपने साधन मन्दिर मल्लेका (सिरसा) में 30 सितम्बर से 2 अक्तूबर तक बहुत धूमधाम से मनाया गया।

स्थानीय धर्म सम्बन्धियों में गज़ब का उत्साह था, क्योंकि साधन मन्दिर में जो 6 नये कमरे 2 नये बाथरूम और बहुत बड़ा डाईनिंग रूम बहुत मेहनत से धर्म सम्बन्धियों ने बनाऐ थे। इसमें वैसे तो सब धर्म सम्बन्धियों का ही थोड़ा वा बहुत योगदान रहा है, परन्तु सुखदेव जी जोसन, गोपाल जी, सुन्दर लाल जी, जगीर सिंह जी ने बहुत दिलचस्पी से काम किया। हरदेव जी, अपनी कमज़ोर सेहत के बावजूद बहुत सहायकारी होते रहे। न्यूज़ीलैंड जाने से पहले जसविन्द्र जी भी हिसाब आदि रखने में सहायक हुए। सरताज जी ने बाथरूम बनाने में सहायता की। इस मन्तव्य के लिए धर्म सम्बन्धियों ने खुलकर दान दिया, जिसको अलग से छापा जाएगा।

श्रीमान मेहरसिंह जी की सेहत बहुत खराब है, धर्म सम्बन्धियों को मिलकर बस रो पड़ते हैं। फिर भी उनको साधन मन्दिर में लाया गया और अपनी धर्म पत्नी समेत उन्होंने नये विंग का उदघाटन किया। बाद में सब में मिठाई बांटी गई।

इस दफा लोकल धर्म सम्बन्धियों ने बहुत अच्छे भावों से फैसला किया कि लंगर का सारा खर्चा धर्म सम्बन्धी मिलकर उठाएंगे, और उनके परिवार भी पूरे सत्संग में दिन भर यहीं रहेंगे, ताकि घर से बेफिक़्र होकर वह सत्संग से लाभ उठा सकें। 100 – 125 जन हररोज़ सभा में आते रहे और सब का खाना लंगर में ही होता था। इस सत्संग में पुराने ज़माने की झलक मिलती थी। क्या स्त्रियां, क्या पुरुष भाग 2 कर सेवा करते थे।

सत्संग में शामिल होने के लिए यात्री चण्डीगढ़, गंगानगर, नेपाल, पदमपुर, गजसिंहपुर, बठिंडा, कल्याण, गोनियाना, जयपुर से दो नये जन, हिसार, जसविन्द्र जी न्यूज़ीलैंड से अपना प्रोग्राम कैंसल करके सत्संग से पहले पहुँच गए थे, और लोकल सब धर्म सम्बन्धी सम्मलित हुए। साधन मन्दिर में खूब रौनक थी। सभाएं श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, गौतम जी, धर्म सिंह जी चौहान, सुरजीत जी बराड़, सरताज जी और राधेश्याम जी ने कराई। सब सभाएं प्रभावशाली थी परन्तु यह हम इन्सानों के वश की बात नहीं थी, गुरू महाराज की सबसे बड़ी कृपा थी और

अन्य सहायकारियों ने जैसे सहायता की बारिश कर दी थी।

**30 सितम्बर 2023**

**प्रवेश सभा:** सत्य धर्म बोध उत्सव की विशेषता, सभाओं से लाभ उठाने की जरूरी शर्तें अगले दिन के प्रोग्रामों की सूचना।

**सभापति :** श्रीमान गौतम जी गोनियाना।

सबसे पहले गुरदेव राज जी ने "हमारे पूजनीय सतगुरू....." भजन का गान किया। देव स्तोत्र और प्रार्थना विषयक भजन के बाद सभापति जी ने बताया कि भगवान् का कारज बहुत मुश्किल है, इस उत्सव में हम अपने आप को जानने के लिए आए हैं। बाहर की दुनिया का हमें बहुत ज्ञान है पर हमें अपने विषय में ज्ञान नहीं है। यह ज्ञान कुछ न कुछ प्राप्त करने के लिए यहां पधारने के लिए हम आपका स्वागत करते हैं। फिर गुरुदेव राज जी ने "सेवको और श्रद्धावानों, गुरु के प्यारो स्वागतम" नामक भजन गाया।

फिर सभापति जी ने फरमाया कि एक सच्चाई जो हमें याद नहीं रहती वह सच्चाई है मौत। जीवन की असारता को प्रकट करने वाली घटनाएं बताईं। आगे उन्होंने यह बताया कि जीवन की सफलता आत्म बोध में है। सत्य धर्म बोध उत्सव की विशेषता बताते हुए जीवन परिवर्तन की घटनाएं बताई।

गुरू महाराज जी ने हमें उचित धन कमाने, उचित सेहत संभाल करने की शिक्षा दी है। स्वास्तित्व संबंधी आदेशों का अच्छे ढंग से वर्णन किया गया। फिर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने सभापति गौतम जी का धन्यवाद किया और सत्यधर्म की विशेषता का बयान किया।

**1 अक्तूबर 2023 सुबह 9.00 बजे।**

**विषय :** आत्म बोध के लाभ और आत्म अबोधता की हानियां।

**सभापति :** श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

'मिले हैं हमें देवगुरू जग में न्यारे' भजन के गान और देव स्तोत्र के गान के बाद 'ज्ञानी होना हो जो संभव' भजन गाया। सभापति जी ने फरमाया कि अगर हम से कोई पूछे कि हमारा क्या हाल है तो हम कह देते हैं कि ठीक है, क्योंकि हम अपने आप को नहीं जानते। हम अपने आप को बढ़िया समझते हैं जो कि ठीक नहीं है। हमारा लक्ष्य क्या है? यह भी हमें पता नहीं है। अगर हमें यह पता लग जाए कि हम अपने आप को बहुत कम जानते हैं तो हमारा कुछ भला हो जाए। यूनानी फिलॉस्फरों ने यह कहा है कि वह व्यक्ति मूर्ख है जो यह नहीं जानता कि मैं कुछ नहीं जानता। अपने आप को जानने का मतलब यह है कि हम क्या अच्छे व बुरे काम करते हैं और क्यों करते हैं? जो सोचते हैं वह क्या और क्यों सोचते हैं और जो बोलते हैं वह क्या और क्यों बोलते हैं? गुरू महाराज ने बताया है कि हम कोई भी गति अपने भावों से करते हैं। पवित्रता के भाव पवित्र आत्माओं को चलाते हैं। दयावान को दया का भाव चलाता है। कुछ लोग समझते हैं कि हमें ईश्वर चलाता है। हम कितने अच्छे हैं, वह अपने भावों के अनुसार हैं। जब तक हमारे अंदर अच्छा परिवर्तन न आए तब तक हम उन्हीं भावों के अनुसार चलते रहते हैं। भगवान देव आत्मा के अन्दर विशेष देव भाव आए हैं। उनके भीतर देव ज्योति और देव तेज विकसित हुए हैं जो हमारे भावों में परिवर्तन पैदा करते हैं। सभापति जी ने फरमाया कि यहां आकर मुझे अपने भावों का कुछ न कुछ ज्ञान हुआ है, सभापति जी ने

आगे फरमाया कि मुझमें भगवान के प्रभावों ने कुछ न कुछ पवित्रता के भाव पैदा किए है, मैं भगवान का यह ऋण कभी उतार नहीं सकता। हमारा सौभाग्य होगा अगर हमें हमारी कोई बुराई, कोई कमी, कोई नीचता दिखाई दे। एक धर्म संबंधी ने अपने नीच भावों के साथ युद्ध किया और इसको अनुभव किया कि कैसे उनके भीतर स्वाद और आलस्य अनुराग ने उनको हानि पहुँचाई। अबोधता और अज्ञानता में बहुत बड़ी हानियां होती हैं। दवाई की जगह अगर अबोधता से ज़हर खा लिया जाए तो नुकसान होता है। सभापति जी ने बताया कि काफी समय पहले मैंने एक किताब पढ़ी थी जिसमें लिखा था कि एक व्यक्ति ने 50 – 60 कत्ल कर दिए, जब वह पकड़ा गया तो कहता था कि मुझ निर्दोष और मासूम को ऐसे ही पकड़ लिया। हम अपने आप को पापी होकर भी निर्दोष और मासूम समझते हैं। हम अपने आप को प्यार करते हैं। हम अपने बच्चों से भी अधिक अपने आप को प्यार करते हैं। यही बुराई का मुख्य कारण है। हमारे से ग़लतियां भी होती हैं। जितना ज्यादा हमारा स्वार्थ होता है उतने ही हम नीच होते हैं। इस दर पर हमारे अंदर परिवर्तन आता है।

सभापति जी ने फरमाया हमने अपने भावों को समझना है। हमने अपने आपका आत्म परीक्षण करना है। अगर हमें हमारा ज्ञान नहीं तब हमारी योग्यता कुछ काम की नहीं। हमारा अहं हमें गुमराह करता है। अगर आत्म परीक्षण नहीं करते तो एक पशु और मनुष्य में कोई अंतर नहीं। क्या हम इंसान कहलाने के हक़दार हैं? सबसे जरूरी ज्ञान है "मैं क्या हूं" अगर यह सवाल पैदा नही होता तो हम पशु स्तर पर हैं। खराब भावों से मोक्ष लाभ करनी है और उच्च भावों को विकसित करना है। दुनिया पुनर्जन्म और आवागमन से मोक्ष को मोक्ष समझती है। सभापति जी ने फरमाया के आवागमन और पुनर्जन्म होता ही नहीं है। मोक्ष का एक अर्थ यह है कि हमने बुराइयों और बुरे भावों से मोक्ष लाभ करनी है। इतने साल हो गए हमें देव समाज में आते क्या हमने नीच भाव से मोक्ष लाभ कर ली है? जब तक नीच भाव घटते नहीं और उच्च भाव पैदा नहीं होते तब तक हमारा कुछ नहीं बनता। सभापति जी ने सवाल किया कि शुक्रगुजार क्या होता है? हाजरीन ने इसका उत्तर दिया। भगवान ने फरमाया कि जो उपकार पाकर प्रति उपकार नहीं करता, वह खुदगर्ज़ पापी और कमीना है। यह दर हमें कृतघ्न बनने से बचाता है और कृतज्ञ बनाता है।

**दूसरी सभा :** स्वास्तित्व संबंधी आदेशों का पाठ और व्याख्या।

**सभापति :** श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान ।

सभापति जी ने स्वास्तित्व संबंधी आदेशों की बहुत विस्तार से व्याख्या की। उन्होंने बताया कि मन, वचन और कर्म से कोई भी कार्य करने से आत्मा पर प्रभाव पड़ता है। आत्मा निर्लेप नहीं है। हमें हमारे भाव चलाते हैं। उन्होंने संस्कृत के श्लोक बोल कर और उनकी व्याख्या करके अपने विषय को स्पष्ट किया। उन्होंने देव समाज की फिलॉसफी का सार बताया कि मोक्ष और विकास ही देव समाज का दर्शन है यही हमारा लक्ष्य है। निर्माणकारी शक्ति हमारी गतियों के आधार पर घटती और बढ़ती है।

**पब्लिक तकरीर** शाम 4.00 बजे,

**विषय :** भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों का

इंसानी दिलों पर अद्वितीय कार्य,

**वक्ता :** श्रीमान सरताज सिंह जी।

सबसे पहले श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने वक्ता का संक्षिप्त परिचय करवाया। फिर माननीय वक्ता ने श्रीमान नौध सिंह जी का परिवर्तन बताते हुए कहा कि कैसे वह शराबी, मांसाहारी, और ठग थे। कैसे वह अपनी पत्नी पर अत्याचार करते थे। भगवान् के प्रभाव जब माननीय श्रीमान गुरवंत सिंह जी द्वारा उन तक पहुंचे तब उनका जीवन ही बदल गया। फिर उन्होंने सरदार सुच्चा सिंह जी का परिवर्तन बताया। कैसे उनका जीवन बदला, कैसे उनका देव समाज में आना और अपनी बेटी को लाहौर पढ़ने भेजना विरोध का कारण बना और उन्होंने उसकी परवाह न की। इसके बाद उन्होंने उसी सभा में मौजूद श्रीमान चमन लाल जी नेपाल और उनकी धर्म पत्नी जी का परिवर्तन सुनाया। वक्ता ने यह भी बताया कि कैसे उन्होंने स्वयं अपने पिता जी की सेवा करके देव समाज के प्रति उनका विरोध कम किया। फिर उन्होंने सरदार जमीयत सिंह जी के परिवर्तन का ब्यान किया। अंत में सभापति जी ने वक्ता का धन्यवाद किया।

**चौथी सभा :** शाम 6.00 बजे।

**सभापति :** श्रीमान पंडित राधे श्याम जी।

सभापति जी ने नेचर, मनुष्य और सत्य धर्म की परिभाषा देवात्मा की शिक्षा के अनुसार बताई। हमारे अस्तित्व में शरीर और आत्मा है। शरीर के नियम पूरे न करने से शरीर बिगड़ जाता है वैसे ही आत्मा भी बीमार होती है। मनुष्य का विकास पशुओं से हुआ है। हमारे अस्तित्व के निर्माता हमारे माता पिता हैं। हमारे माता पिता हमारे जन्मदाता, पालनकर्ता, रक्षाकर्ता और शिक्षादाता हैं। मनुष्य का लक्ष्य क्या है यह सभापति जी ने बताया। हमारे कर्मों का फल हमें तुरन्त मिलता है, अगले जन्म में नहीं। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी से लैंप की चिमनी टूट गई उन्होंने कहा मेरे से खून हो गया। जब आत्म बोध हो जायेगा तब हमारे अस्तित्व से हानि नहीं होगी। हम तारीफ पाने के लिए सेवा के काम करते हैं। गुरू महाराज सवेरे चार बजे अपने देव प्रभाव फैलाते हैं और हम सो रहे होते हैं और उन्हें रिसीव नहीं करते। सभा काफी अच्छी और प्रभावशाली थी।

**2 अक्तूबर 2023 ,**

**पहली सभा :** सेवेरे 9.00 बजे।

**सभापति :** माननीय श्रीमती सुरजीत बराड़ जी।

भजन और देव स्तोत्र के गान और व्याख्या के बाद एक भजन 'श्री देवगुरू भगवान् ने हमें क्या से क्या है बना दिया' गाया गया। सभापति जी ने फरमाया कि हम सामाजिक जीव हैं और समाज से ही सब कुछ सीखते हैं, समाज का जैसा वातावरण होता है, हम वैसे ही बनते जाते है। वातावरण हमें अच्छा वा बुरा बनाता है। एक ईमानदार बेईमानों, रिश्वतख़ोरों की संगत में बैठता रहकर बेईमान वा रिश्वतख़ोर बन जाता है। उन्होंने एक हैडमास्टर की दर्दनाक कथा सुनाई कि उनके घर को सुरक्षित समझकर कुछ डाकू अपना समान रख देते थे, धीरे–2 उन्होंने हैडमास्टर को उकसाना शुरू किया कि हमारे साथ मिल जाओ, तुम कुछ दिनों में अमीर बन जाओगे, वह उनके साथ शामिल हो गया, जल्दी ही वह गिरोह पकड़ा गया, शहर के लोगों ने देखा कि कैसे पुलीस हैडमास्टर को पकड़ कर ले गई। वातावरण हम पर गहरा असर डालता है। हम दो दिन से देव

समाज के इस वातावरण में बैठे हैं। यह वातावरण हमें शराब, नशों और मांसाहार से बचाता है और इस वातावरण में आकर कितने ही पटवारियों, थानेदारों ने रिश्वतें वापस की हैं। यह वातावरण हमें मिथ्या विश्वासों से बचाता है। मिथ्या विश्वास बहुत भयानक होते हैं। यह हमारी तर्क शक्ति को समाप्त कर देते हैं। हर रोज नए बाबा बन रहे हैं और वह अपराध करते हैं फिर भी लोग उन पर श्रद्धा रखते हैं। यह वातावरण हमें इन मिथ्या विश्वासों से निकालता है। इस वातावरण से हमारे संबंध बेहतर बनते हैं। माता - पिता का सम्मान करना हम इसी वातावरण से सीखते हैं। पति - पत्नी इस वातावरण में अपनी ग़लतियां देखते हैं और एक दूसरे से माफिया मांगते हैं। भाई - भाई आपस में लड़ना बंद करके सम्बन्ध को मीठा बनाते हैं। इस वातावरण में सांस लेना हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य है।

सभापति जी ने हाजरीन को देव समाज का साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित किया और बताया कि पढ़ने के द्वारा हम अपने इर्द गिर्द अच्छा वातावरण बना सकते हैं।

**दूसरी सभा :** भाव प्रकाश ।

**सभापति :** श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

श्री सभापति जी ने फरमाया के इस वातावरण में आकर मेरा बहुत भला हुआ है। इस वातावरण ने मुझे अपने माता - पिता का सम्मान करने लगा दिया। मैं धर्म संबंधियों, अपने माता - पिता और भगवान देव आत्मा का कर्ज़ चुका नहीं सकता। सभापति जी ने फरमाया कि सत्य धर्म का काम है कि हम अपने संबंधों में अच्छे व्यवहार करना सीख जाएं।

**1 – श्रीमती निशा जी नेपाल :** यहां आने से पहले मुझे यह नहीं पता था कि मेरा इतना भला होगा। नेपाल में रहकर हम देव समाज से कट से गए थे। अब हम आने वाले सारे सत्संगों और महोत्सव पर पहुंचेंगे। हमारा भला हुआ है। सभा कराने वालों का धन्यवाद किया।

**2 – श्रीमान जगीर सिंह जी :** (लिखकर) **देव आत्मा के देव प्रभावों का कार्य:** इन सभाओं से फायदा :

सम्मान के योग्य धर्म संबंधियो! सबको सत्य देव की जय! मेरे भाव बिगड़े हुए थे, जो मुझे नीच गतियां करवा रहे थे और मुझे बर्बादी की तरफ ले जा रहे थे। मुझे उन नीच भावों से बचने की शक्ति मिली। इसलिए मैं सब कर्मचारियों का धन्यवाद करता हूं। सब का शुभ हो। मैं पापी व अपराधी हूं। मुझे श्रीमान राधे श्याम जी की सभा में जो घटना बताई गई थी कि एक कर्मचारी से लालटेन गिर गई और चिमनी टूट गई, तो वह रोने लगे कि मुझसे कत्ल हो गया। यह घटना मुझे तड़पा रही है कि हम तो फिर कितने प्रकार के कत्ल कर रहे हैं। यह हमें कभी भी महसूस नहीं हुआ। उदाहरण के तौर पर हम भौतिक जगत का अपमान करते हैं, तो हम उसे पाप नहीं गिनते। मेरे से कुछ दिन पहले गाड़ी का शीशा टूट गया, मुझे कुछ भी महसूस नहीं हुआ। मेरी पागल अवस्था के कारण मुझे अफसोस नहीं हुआ। अब मुझे अफसोस हो रहा है और महसूस हो रहा है कि श्रीमान जी कितने उच्च बोधों के मालिक थे। हम भी चाहते हैं कि हमें उच्च बोध प्राप्त हों। हम किसी भी जगत का अपमान वा हानि न कर सकें।

**3 – श्रीमान चमन लाल जी नेपाल** (लिखकर) : मैं कहां कच्चा मांस खाने वाला, मांसाहार को

अच्छा समझने वाला, शराब को बुरा न समझने वाला इंसान था, पर इस दर में आने के बाद यह सब चीजें बुरी लगने लगी और इन चीज़ों से दूरी बनाए हुए हूं। हमें माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी की सभाएं सुनने को मिलती रही। जिसके कारण से मेरा जितनी योग्यता थी उस हिसाब से मुझे फायदा हुआ। इस दर से जुड़ने से पहले मैं क्या था और जुड़ने के बाद क्या हूं। पहले मैं एक घोर पापी इंसान था, ना जाने कितने जानवरों का खून किया, कितने पक्षियों की हत्या की, कितने लोगों से लड़ाई झगड़ा किया, बुरा भला कहा। फिर भी अपने आप कुछ नजर नहीं आया। जब से इस दर से जुड़ा हूं तब से बहुत भला हुआ है। मोटे-मोटे बुरे काम छोड़े हैं। इतने से ही मेरा बहुत भला हुआ। इसी से मैं खुशियों से गदगद हो जाता हूं। अब जितना भी मेरे से हो सकता है किसी का भला करके खुशी महसूस करता हूं। अब मैं लोगों को यह कहता फिरता हूं कि जैसे मेरे मां-बाप, मेरी पत्नी और मेरे बच्चे हैं वैसे सबके हों। यह सब इस दर की ही देन है। अब मुझे यह समाज का बहुत बड़ा कर्ज़ महसूस होता है। जितना संभव होगा सत्संग में शामिल होने की कोशिश करूंगा। आगे भी बचे रहने की कोशिश करूंगा।

सत्य देव की जय।

- चमन लाल

**4 - सुरजीत कौर धर्मपत्नी श्रीमान हरदेव सिंह जी (लिखकर)** श्रीमान जी सत्यदेव की जय! मैं सुरजीत कौर पत्नी श्रीमान हरदेव सिंह, लिखकर भाव प्रकाश करती हूं कि हमारे धर्म संबंधी श्रीमान सरताज सिंह जी और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती दविंदर कौर जी हमारा बहुत ख़्याल रखते हैं। हमें भी गुरू की महिमा की समझ मुश्किल से आई थी, मैंने अपनी बहू को कहा कि आज सभा में आप भी चलो, वह कहती मेरे को मजबूर न करो। मैं अपना धर्म छोड़कर नहीं जाती। मैंने सभा के बाद श्रीमती दविंदर कौर जी से बात की तो वह पति-पत्नी (सरताज जी और दविन्द्र जी) सुबह-सुबह सैर के टाइम हमारे घर आए और हमारी बहू को सभा में आने के लिए कहा और वह बड़ी खुशी से सभा में आई। जब हमने घर बनाया तब भी इन दोनों ने हमारा बहुत साथ दिया और जब हमने बच्चों की शादी की तब भी इन दोनों ने हमारा साथ दिया। कमाल कर दी, नहीं तो शादी में शराब और मांस हमारे घर में आते, हम उजड़ जाते। और धर्म संबंधियों को भी बहुत धन्यवाद देती हूं, उन्होंने भी हमें बहुत संभाला है, धन्यवाद।

**5 - श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना :** यहां का वातावरण देखकर बहुत खुशी हुई। सेवा करने वालों का बहुत-बहुत धन्यवाद। मेरी धर्मपत्नी जी ने इस मंदिर को बनाने के लिए दान दिया था। मेरी धर्मपत्नी जी अच्छा दिल रखती थीं। उन्होंने परलोक गमन करने से पहले अच्छे कामों के लिए पैसे रखे थे। मेरे रिश्तेदार इस वातावरण को पसंद नहीं करते, पर मैं इस वातावरण से लाभ उठाता हूं। मेरी बेटी कहती है कि आप विदेश आ जाएं परंतु मैं देव समाज के वातावरण को छोड़कर विदेश नहीं जाना चाहता।

**6 - श्रीमती प्रीतम कौर जी पटियाला :** मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि मैं भगवान देवात्मा के सेवक की संतान हूं। मैंने इस वातावरण से बहुत कम लाभ उठाया है और इस वातावरण की कभी कोई सेवा नहीं की। मैं पुस्तकों का पाठ किया

करूंगी और देव आरती का गान किया करूंगी।

श्रीमती सुरजीत बराड़ जी ने श्रीमती प्रीतम कौर जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके पिता जी के जीवन परिवर्तन का ज़िकर किया।

**7 – श्रीमान हरदेव सिंह जी :** मैं बच्चों को सभा में आने के लिए प्रेरणा कर रहा था पर बच्चे आना नहीं चाहते थे, मुझे गुस्सा आ रहा था। मैं देव समाज में श्रीमान बलदेव सिंह जी की प्रेरणा से आने लगा हूँ। और अब मैं बच्चों को प्यार से इस वातावरण में आने के लिए प्रेरणा किया करूंगा।

**8 – श्रीमान बलदेव राज जी** (सुपुत्र श्रीमान सुंदर लाल जी) मैं दो-तीन दिन से सभाएं सुन रहा हूं। मुझे बहुत लाभ हो रहा है। मेरे माता-पिता जी और धर्मपत्नी जी बहुत अच्छे हैं। मैं अपनी धर्मपत्नी पर थानेदारी करता हूं। अब नहीं करूँगा। मेरे भाई बहुत अच्छे हैं वह मेरी आज्ञा का पालन करते हैं। (आप का ब्यान प्रभावशाली था)

**9. श्रीमती दविंदर कौर जी :** मैं सब का यहाँ पहुँचने का धन्यवाद करती हूं। इस दर से बहुत कुछ मिला है। सेविका बनते वक्त कदर नहीं थी। श्रीमान सुखदेव जी हमारे बच्चों को संभालते और हम सभा सुनते थे। इन सभाओं की वजह से हमारे बच्चे अच्छे बन गए हैं। मैं कई बार अपने पति जी को दोषी ठहराती हूँ परन्तु गलती मेरी होती है। मैं अपनी बहनों को प्रेरणा करती हूं कि वह सभाओं में जरूर आएं।

**10 – श्रीमान बूटा सिंह जी कल्याण :** अगर गुरू महाराज न होते तो हमारा क्या हाल होता। श्रीमान गुरबख्श सिंह जी, श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान बल बहादुर सिंह जी ने मेरा भला किया है। मेरी और मेरी धर्मपत्नी जी की इन धर्म संबंधियों ने बहुत सेवा की है।

**11 – श्रीमान ज्ञानचंद जी गंगानगर :** (नए जन) इन्सान गलतियों का पुतला है। मैं शराब और मांस छोड़ने की प्रतिज्ञा करता हूं। एक हफ्ते के लिए प्रतिज्ञा की गई।

**12 – श्रीमान बलदेव सिंह ढाणी :** मेरे बच्चे इस वातावरण में आने लग गए हैं, मुझे बहुत खुशी है। शादी जितना चाव इस उत्सव पर चढ़ा रहा। मैंने कई लोगों को निमंत्रण दिए थे और लोग आए भी हैं। ज्यादा से ज्यादा उत्सव यहां मनाए जाएं।

**13 – श्री कमल जी गंगानगर** : यहां आकर मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं बचपन से ही अच्छी जगह आना चाहता था और मैं बहुत अच्छी जगह और अच्छी समाज में अब आ गया हूं।

**14 – सेठ जमनालाल जयपुर (नए जन) :** परिवार में रहने से भी अधिक यहां आनंद आया। मैं कई संस्थानों में जाता हूं। परंतु यह संस्था सबसे बढ़िया है। मैं शराब मांस छोड़ना चाहता हूं एक महीने के लिए छोड़ता हूं। मैं ब्रह्माकुमारी संस्था आदि में जाता हूं परंतु कहीं से कुछ भला नहीं होता।

**15 – श्रीमान सुंदरलाल जी :** दिल में ख्याल आ रहा है कि गुरू की महिमा अपरम्पार है। घर में सब एक दूसरे का सम्मान करते हैं। घर में हम आपस में सत्य देव की जय बुलाते हैं। पुत्रवधु बहुत अच्छी है। गुरू महाराज और धर्म संबंधियों की मेहरबानी है। मैं अनपढ़ होकर भी गुरू दर के पैसों का हिसाब संभालता हूं। धर्म संबंधियों के दर्शन करके बहुत लाभ हुआ और खुशी मिली है। श्रीमान जी माननीय बलदेव सिंह जी के दर्शन करने का मन था।

**16 – श्रीमान अनिल जी :** मैंने अनुभव किया है कि देव वाणी को हृदय में ग्रहण करना चाहिए।

**17 – जसविन्द्र सिंह मल्लेका :** पिछले दिनों में मैं न्यूज़ीलैण्ड में था बहुत ही सम्मान के योग्य श्रीमान बलबहादुर सिंह जी का फोन आया। उन्होंने बताया कि मल्लेका मन्दिर में सत्य धर्म बोध उत्सव 30 सितम्बर से 2 अक्तूबर तक मनाया जाएगा। मैंने कहा, श्रीमान जी हम 1 अक्तूबर को आएंगे श्रीमान जी ने कहा फिर तो आप सत्संग मिस कर दोगे, तब पिता जी भी बीमार चल रहे थे अगले दिन पिता जी की तबीयत ज्यादा बिगड़ गई, उन्हें एडमिट कराना पड़ा और हम दूसरे ही दिन यानि 11 सितम्बर को चल पड़े और यहां गए। सत्संग के कई दिन बाद तक कशमकश चलती रही कि पिता जी की बीमारी पर आना तो जरूरी था परन्तु सत्संग की अहमियत नहीं समझा। यदि पिता जी बीमार न भी होते तो भी मुझे सत्संग से पांच सात दिन पहले आना चाहिए था उसके लिए मैं शर्मिंदा हूं।

मल्लेका मंदिर बहुत सुन्दर बन गया है पहला सत्संग भी बहुत ही बढ़िया रहा। इंतजाम भी बढ़िया थे, सब कुछ बहुत चाव भाव से हुआ सभी धर्म सम्बन्धी भी धन्य धन्य हो रहे थे, साथी सेवकों और श्रद्धावानों की एकता भी उम्मीद से ज्यादा थी। सभाएं बड़ी शानदार और हितकर हुई लेकिन फिर भी एक टीस दिल में उठ रही थी कि बहुत ही सन्मान के योग्य बड़े श्रीमान जी मन्दिर में अपनी बढ़ती आयु के कारण नहीं आ सके, जिन्होंने 30 – 40 वर्ष तक मेहनत मुशक्त करके एक एक जन को पता नहीं कैसे सुधारा, हमारे रेगिस्तान जैसे तपते टीलों पर देव अमृत की बूंदों की वर्षा करके हम जैसे झाड़ीदार कांटो से भरे पेड़ों को कुछ थोड़ा बहुत छाया देने लायक बनाया। फल तो हमें क्या लगेंगें, मुझे तो फूलों की गुंजाईश नहीं लगती है। चलो जितनी योग्यता है चलेंगे, लेकिन मैं श्रीमान की मेहनतों का कभी भी मोल नहीं उतार सकता। मैं सारी जिन्दगी वक़्त की कदर नहीं कर सका अब थोड़ी बहुत होश आई है। दूसरा श्रीमान मेहर सिंह जी ने मुझ पर बहुत मेहनत की है। अगर मैं समाज में चल रहा हूं तो इसमें उनकी कृपा का भी हाथ है।

मैं श्रीमान जी आप दोनों की बहुत कद्र करता हूं और आज से हर रोज सुबह आपकी अच्छी सेहत व लम्बी उम्र की कामना किया करूंगा ताकि मेरा और भला हो सके।

**18 – नवदीप जोसन, मल्लेका :** सत्यदेव की जय सबसे पहले मैं यह बताना चाहती हूं कि मुझे इन सभाओं में से सबसे ज्यादा अच्छी सभा श्रीमान राधे श्याम जी और श्रीमती सुरजीत बराड़ जी की लगी। मुझे इन सभाओं में से यह सीखने को मिला ऑलवेज स्टैंड विथ टुरूथ एंड स्पीक टुरूथ, ऑलवेज एक्सेप्टेड ऑन मिस्टेक (सदा सच्चाई के साथ खड़े रहे। और सच्च बोलो, अपनी ग़ल्तियों को स्वीकार करो।

मुझे इन सभाओं में से यह सीखने को मिला की दूसरे के उपकारों को हमें हमेशा याद रखना चाहिए। मुझे इन सभाओं में से यह सीखने को मिला कि पूरे संसार में यह पहला धर्म है जहां व्यक्ति स्वयं अपनी गलती को स्वीकार करता है और वह उन गलतियों को सुधारने का प्रयत्न करता है। मुझे श्रीमती सुरजीत बराड़ की एक बात बहुत अच्छी लगी और यह बात बिल्कुल सत्य है कि संसार में इतने धर्म हैं परंतु किसी भी धर्म में हमें अपने बारे में नहीं बताया जाता। इस

धर्म में हमें मिथ्या, अंधविश्वास आदि से मुक्त करवाया जाता है। आगे जिस प्रकार एक कर्मचारी से लालटेन का शीशा टूटने से, उसको दुख हुआ ठीक उसी प्रकार से मनुष्य को किसी हानि को अनुभव करना चाहिए। इस संसार में छोटी से छोटी वस्तु की कीमत को समझना चाहिए। मैं इन सभाओं के लिए समाज की बहुत कृतज्ञ हूं और मैं अपनी ओर अपना ध्यान ले जाने की कोशिश करूंगी।

सभापति जी ने नए जनों से शराब एवं मांस छोड़ने के लिए कहा इसके रिस्पोंस में तीन-चार जनों ने मांस और शराब कुछ समय के लिए छोड़ने की प्रतिज्ञा की। 24500/- दान प्राप्त हुआ। अंत में देव आरती का गान करके यह उत्सव सम्पन्न हुआ।

(एक हाजरीन)

# निज का साधन करने की आवश्यकता

देवधर्म जीवन का धर्म है। जीवन धर्मगत हित अभिलाषा के उत्पन्न होने के बिना लाभ नहीं होता। जीवन संबन्धी हित अभिलाषा के उत्पन्न होने पर ही कोई ऐसे साधन जानना और पूरे करना चाहता है कि जिन से जीवन का हित हो। *साधन के बिना जीवन उन्नत नहीं होता। इसलिये प्रत्येक जीवनकांक्षी के लिये साधनशील होना आवश्यक है।*

जो सेवक अथवा श्रद्धालु जन कर्मचारियों के साधनों में योग देने के अनंतर फिर आप कोई अभ्यास नहीं करते अथवा उनके शिक्षक जन उन्हें जो साधन बताते हैं, वह बिल्कुल वा भली भांति पूरा नहीं करते, वह धर्म जीवन लाभ नहीं कर सकते। ऐसी अवस्था में वह नीचे की गति की ओर ही जाते हैं, और अपनी धर्मजीवन लाभ विषयक योग्यता को (यदि वह कुछ भी उनमें वर्तमान हो) धीरे-2 खोते जाते हैं। इसीलिये जो जन हमारी संगत में आकर और अनेक साधनों में योग देकर भी अपनी उन्नति के लिए आप साधन करना आरम्भ नहीं करते, और जो कुछ उनके शिक्षक जन उनकी भलाई के लिये उन्हें बताते है, उसे पूरा नहीं करते, वह उपरोक्त नियम के अनुसार जहां अपने जीवन की बहुत बड़ी हानि करते हैं, वहां कर्मचारियों के अति श्रेष्ट और मूल्यवान परिश्रम को भी निष्फल करते हैं।

- श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी

## सूचना

*धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :* -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154
+91 98769-59659

***देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।***

**DEV SAMAJ (G)**
**Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh**
**Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414**

# ऐसे थे बाबा जी

**यह घटनाएं सरदार करतार सिंह अकाली ने लिखी हैं जो कि पहले बाबाजी के विद्यार्थी थे और बाद में उन्हीं के साथ कॉलेज में काम करते थे।**

## 1. असहायों की सहायता।

1934 में दिसंबर की एक ठंडी सुबह थी जब मैं बाबा जी (श्रद्धेय श्रीमान पी. वी. कनल जी) के साथ उनके कार्यालय में बैठा हुआ था। आसमान बादलों से घिरा हुआ था और बूंदाबांदी हो रही थी। तेज़ ठंडी हवाओं ने कड़कड़ाती ठंड को और बढ़ा दिया था।

बाबा जी ने अपनी खिड़की से देखा कि एक लड़का आधी बाजू की सफेद सूती शर्ट पहने कॉलेज आ रहा है। उसने न तो कोट पहना है और न ही स्वेटर। वह अपनी बांह के नीचे कुछ किताबें लेकर ठंड से कांपते हुए अपनी कक्षा की ओर भाग रहा है। बाबा जी ने मुझ से यह पता लगाने को कहा कि उसने कुछ भी गर्म कपड़ा क्यों नहीं पहना है?

मैं बाहर गया और लड़के से पूछा। पूछने पर उसने मुझे बताया कि वह एक डाकिये का बेटा है। उसके तीन भाई और दो बहनें हैं। पिता को मात्र पन्द्रह रुपये वेतन मिलता है। गर्म कपड़ों का तो कहना ही क्या, दो वक्त की रोटी भी बड़ी मुश्किल से मिल पाती है। मैंने उसे सलाह दी कि ठंड से बचने के लिए कम से कम अपने आप को चादर से ढक ले और मैंने उसे जाने दिया।

मैंने बाबा जी को बताया कि वह लड़का कॉलेज के द्वितीय वर्ष का शरीफ अहमद है और उसके गरीब पिता को अपनी बहुत कम आय से एक बड़े परिवार का भरण-पोषण करना पड़ता है।

बाबा जी ने मुझे लड़के को स्वदेशी स्टोर पर ले जाने का निर्देश दिया और कहा कि कॉलेज के समय के बाद उसके लिए गर्म कपड़ा खरीदकर उसका कोट सिलवा देना और बिल का भुगतान वह स्वयं करेंगे। दोपहर को मैं शरीफ अहमद को अपने साथ ले गया, कपड़ा खरीदा और ताजदीन दर्जी से उसका कोट कुछ दिन में सिलवाया।

## 2. वह दृष्टि खो रही हैं

अज़ीज़ अहमद कॉलेज में द्वितीय वर्ष की कक्षा का बहुत सौम्य और अच्छा छात्र था वह कक्षा में सबसे पहले आता था और आगे की सीट पर बैठता था। वह अपनी कक्षा में दूसरे स्थान पर आता था।

एक दिन वह क्लास के लिए पाँच मिनट लेट हो गया। जब बाबाजी ने उससे देर से आने का कारण पूछा तो वह चुप हो गया, उसने अपना सिर नीचे कर लिया और चुप रहा।

अगले दिन, वह दस मिनट लेट हो गया। बाबाजी ने उसे देर से आने के लिए डांटा और कहा कि, "तुम पहले तो हमेशा समय के पाबंद रहे हो अब क्या हो गया है? तुमको इसके लिए शर्मिंदा होना चाहिए।" लड़का तब भी मूक था- उसने केवल अपनी निगाहें झुका लीं और कुछ देर तक खड़ा रहा। ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अपनी भूल के लिये बहुत लज्जित था।

तीसरे दिन वह पन्द्रह मिनट देरी से आया। बाबाजी ने उसे खड़े होकर बताने को कहा कि क्या हुआ है जो तुम हर रोज़ लेट आते हो? लड़के ने कोई जवाब नहीं दिया लेकिन फूट-फूट कर रोने लगा। इस बार बाबाजी की ओर से कोई फटकार नहीं पड़ी।

कक्षा समाप्त होने के बाद बाबाजी ने मुझे अपने कार्यालय में बुलाया और कहा, "अकाली, द्वितीय वर्ष का अजीज अहमद बहुत अच्छा छात्र है। वह कभी देर से कॉलेज नही आता था। अब पिछले तीन दिनों से वह हर दिन देर से आता है और पूछने पर वह देर से आने का कोई कारण नहीं बताता लेकिन रोने लगता है ओर बहुत शर्मिंदा महसूस करता है निश्चित रूप से उसे कुछ समस्या है, यह जानने की कोशिश करें कि उसे क्या हुआ है?

मैंने उस लड़के से संपर्क किया, उसे खेल के मैदान में ले गया और उससे पूछा कि उसकी कठिनाई क्या है। वह फिर रोने लगा, मैंने उसे सांत्वना देने की कोशिश की और उसे थोड़ा स्नेह दिया। फिर उसने बताया, "मेरे पिता का कुछ समय पहले निधन हो गया। मेरे दो भाई और दो बहनें हैं, सभी मुझसे छोटे हैं। मेरी मां को आँखों में परेशानी है, उनकी दृष्टि कमजोर हो रही है। वह पिछले तीन दिनों से बीमार हैं। मैं परिवार के लिए खाना बनाता हूँ। बहन भाईयों को खाना खिलाता हूँ और फिर कॉलेज आता हूँ। इससे मुझे हर रोज़ देर हो जाती है।"

मैंने यह सब बाबाजी को बताया। उन्होंने कहा, "अकाली, तुम कल उसकी मां को मोगा अस्पताल ले जाओ। मेरा पत्र डॉ. मथुरा दास जी को दे दो और उनके ऑपरेशन तक वहीं रहो। साथ ही देव समाज स्कूल छात्रावास के अधीक्षक से अनुरोध करो कि उस महिला की देखभाल करें और उसके लिए भोजन भेजने के लिए कहें, मैं बिल का भुगतान करूंगा।"

निर्देशानुसार, मैं महिला को अगले दिन मोगा ले गया। ऑपरेशन सफल रहा और कुछ ही हफ्तों में वृद्ध महिला बाबाजी के प्रति कृतज्ञता और आशीर्वाद से भरी हुई अपने घर लौट आई।

### 3. "माई, जाओ, मैं तुम्हारी मदद करने की कोशिश करूंगा"

बांसी गेट फिरोजपुर में हरनाम कौर नाम की एक सिक्ख महिला रहती थी। 1935 में उनके पति की मृत्यु हो गई और वह अपने पीछे तीन बेटे छोड़ गए, उनमें से सबसे बड़ा बेटा बाबा जी के कॉलेज में प्रथम वर्ष का छात्र था, दूसरा सनातनधर्म स्कूल में 8वीं कक्षा में था और सबसे छोटा केवल दो साल का था। दोनों बड़े लड़के पहले से ही पैसों के अभाव में निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। पिता की मृत्यु के बाद परिवार टूट गया। उनके पास कोई अन्य साधन नहीं था और कुछ महीनों के बाद गुज़ारा करने के लिए कुछ भी नहीं बचा था।

एक शाम हरनाम कौर, उम्र लगभग 45 वर्ष, बाबा जी के घर आई और रोते हुए अपने घर की दयनीय स्थिति बताई और कहा, "मेरा बेटा जोगिंदर सिंह आपके कॉलेज में पढ़ रहा है। वह यहां मुफ्त शिक्षा प्राप्त कर रहा हे। मेरे पति की मृत्यु के बाद मैं परिवार का भरण-पोषण करने में भी सक्षम नहीं हूं। मैं अपने बेटे को शिक्षा बंद करने के लिए कहती हूं, लेकिन वह

रोने लगता है और शिक्षा जारी रखने की जिद करता है। आपकी उदारता के बारे में बहुत कुछ सुनने के बाद, मैंने आपसे संपर्क किया है। मैं बर्तन धोने तक का काम कर लूंगी या मुझे देव समाज गर्ल्स स्कूल में नौकरी दिलवा दो ताकि मेरा बच्चा अपनी पढ़ाई जारी रख सके। मैं अपनी आखिरी सांस तक आपकी आभारी रहूंगी। मैं अपने बच्चों का विलाप और भूख से उनकी चीखें सहन नहीं कर सकती, हमारे पास खाने के लिए कुछ नहीं है!"

इस अवसर पर मैं बाबाजी के चरणों में उपस्थित था। उनकी आँखों में आँसू आ गये लेकिन वह चुप रहे। थोड़ी देर रुकने के बाद, उन्होंने उस स्त्री से कहा, "माई, जाओ, मैं तुम्हारी मदद करने की कोशिश करूंगा।"

अगले दिन, बाबाजी ने मुझे 20 गज लंबा कपड़ा दिया और निर्देश दिया कि इसे उसके बच्चों को कपड़े पहनाने के लिए उसके घर पर पहुंचा दूं। बाबा जी ने परिवार को भोजन और कपड़े उपलब्ध कराने का जिम्मा अपने ऊपर ले लिया और हरनाम कौर से कहा, "नौकरानी के रूप में काम करने का संकल्प छोड़ दो। तुम अपने बच्चों की देखभाल करो। तुम्हें नेचर में मदद मिलेगी!"

कुछ साल पहले मेरी मुलाकात लुधियाना रेलवे स्टेशन पर जोगिंदर सिंह से हुई। वह एक हाई स्कूल में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत थे। दोनों छोटे भाई स्नातक होकर सरकारी नौकरियों में कार्यरत थे और परिवार अच्छा चल रहा था। बाबा जी की समय पर की गई मदद के लिए धन्यवाद कर रहे थे।

# पवित्र आत्मा

परम पूजनीय भगवान देवात्मा विकासक्रम का अद्वितीय प्रकाश हैं। भगवान देवात्मा सत्य और शुभ के पूर्ण अनुरागी हैं और झूठ और बुराई के पूर्ण शत्रु हैं। भगवान देवात्मा सब प्रकार के सुख अनुरागों से पूर्ण पवित्र हैं। उनका देव जीवन इतना सुंदर और सर्वश्रेष्ठ है कि जब उनके प्रभाव मानव हृदयों पर पड़ते हैं तो उन्हें हीरों की तरह चमकने लगा देते हैं। उनके संपर्क में आए हुए मानव हृदय इतने ऊँचे उठ जाते हैं कि साधारण इंसान तो उन्हें देखकर ही हैरान हो जाते हैं।

श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी भी ऐसे ही महान आत्माओं में से एक हैं कि जिन्हें श्री देवगुरू भगवान के श्री चरणों में साढे आठ वर्ष तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। श्रीमान ईश्वर सिंह जी के भीतर पवित्रता का अति सुंदर सद्‌गुण विकसित हो गया था। उन्होंने पवित्रता का गुण अपनी माता जी से प्राप्त किया था और फिर जवानी की आयु में उसकी रक्षा का काम देव प्रभावों ने किया।

श्रीमान जी ने अपनी श्रद्धेय माता जी के विषय में लिखा है :

'आपके पवित्र जीवन और आपकी इस हिदायत ने कि मैं गाँव की कुंवारी लड़कियों और नौजवान स्त्रियों को अपनी बहनों के रूप में देखूं, उनका सम्मान करूं और उनके सामने आँख न उठाऊँ - मेरा जो भला किया है, उसको मैं

शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता और आपको धन्यवाद देता तृप्त नहीं होता। इस अंग में आपने विश्वासपात्र होने की मेरे जीवन में बुनियाद डाल दी।"

श्रीमान जी दसवीं कक्षा में कुछ महीने देव समाज हाई स्कूल मोगा में तथा उसके बाद फोरमैन क्रिश्चन कॉलेज लाहौर में बी.एस.सी की पढ़ाई के समय में देव आश्रम लाहौर में परम पूजनीय भगवान के श्री चरणों के निकट रहकर उनके विलक्षण देव प्रभाव पाते रहे और इस प्रकार पवित्रता के अति सुन्दर भाव को अनुराग रूप में विकसित करने के योग्य हो गए जो कि हम इंसानों में सहज नहीं मिलता। मनुष्य जगत में बहुत विरले ही ऐसी योग्यता को प्राप्त कर पाते हैं। किसी भी मनुष्यात्मा के लिए पवित्र होना एक अत्यंत वांछनीय सौभाग्य है।

18 जून 1948 के 'सत्य देव संवाद' पत्र में एक लेख में श्रद्धेय श्रीमान जी लिखते हैं :

"मेरे परम पूजनीय भगवान् और कितने ही और धर्म सम्बन्धियों की सहायता से सैंकड़ों और हज़ारों बह्मचारियों से कहीं ज्यादा अच्छी जिन्दगी मैंने गुज़ारी है। मुझे लड़कियों और स्त्रियों में काम करने का अवसर मिला है, मगर मैंने उन्हें हमेशा ही अच्छी निग़ाह से देखा है और उनकी पवित्र भावों से सेवा करने का भी अवसर पाया है। यह सब मुझ तुच्छ पर परम पूजनीय भगवान् और धर्म सम्बन्धियों की कृपा का फल है, वरना मैं जवानी के नाजुक समय में ऐसा कभी न कर सकता। ..... नौजवानी का आलम हो, सेहत हो, शिक्षा हो, जायदाद हो, शादी के लिए हर किस्म की सुविधाएं हों, बड़े बड़े घरों से शादी की दरख़ास्तें आती हों, फिर भी शादी से बचे रहना और परोपकार के कार्य में अपने आप को लगाए रखना और नौजवान लड़कियों और स्त्रियों की सेवा के योग्य बनना, भगवान् देवात्मा की शक्ति का ही काम है। उन्हीं की शक्ति की ही करामात है।"

उनकी पवित्रता की मूर्ति को सम्मुख लाकर अधिकारी जन बहुत प्रेरणा लाभ कर सकते हैं और भगवान् से अपना सम्बन्ध जोड़कर स्वयं भी पवित्र बन सकते हैं।

ऐसे ही पवित्र आत्मा थे श्रद्धेय श्रीमान पण्डित परमेश्वर दत्त जी और भाई मोहन देव जी। भगवान देवात्मा के श्री चरणों के निकट रहकर भाई मोहनदेव जी इतने पवित्र बन गए कि एक बार स्वयं भगवान ने फरमाया था कि अगर मैं अपनी पुत्री को बेफिक्र होकर किसी के हवाले कर सकता हूं तो वह भाई मोहन देव जी हैं।

मेरे भगवान की महिमा इतनी महान है कि वह अपने देव प्रभावों से श्रीमान नौध सिंह जी जैसे अपवित्र आत्मा को जो वेसवाओं के जाते थे, जो इतने अपवित्र और मालीन हो चुके थे कि उनकी सगी बहन अपनी बेटियों को उनके साथ दूसरे शहर नहीं भेजती थी, उन को इतना पवित्र बना देते हैं कि वह अपने देश की सेवा करने वाली देव समाज की बेटियों की रक्षा करने वाले बन जाते हैं।

ऐसे भगवान के श्री चरणों में विवश मेरा सिर झुक रहा है और दिल से यह आवाज आ रही है : धन्य हैं देवगुरू भगवान, धन्य हैं देवगुरू भगवान!

गौतम गोनियाना

# अपने आप का ज्ञान – 4

पिछले लेखों में हमने नशा अनुराग, आलस्य अनुराग, स्वाद अनुराग, काम अनुराग, सन्तान अनुराग ओर धन अनुराग के विषय में कुछ सत्यों का वर्णन किया है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा जो मनुष्यात्माओं का सब प्रकार का हित चाहते थे और हित करने के लिए सदा व्याकुल रहते थे उन्होंने अपने सत्य की रोशनी में देखा कि मनुष्य के सुख के भाव ही उसे चलाते हैं और जब कोई भी सुख का भाव इतना बढ़ जाता है कि मनुष्य उस सुख का अनुरागी बन जाता है और बार 2 उस सुख की तृप्ति चाहता है, उससे उसके शरीर वा आत्मा की कितनी हानि हो रही है, उसको जानकर भी वह उन सुखों की तृप्ति करने के लिए बेबस हो जाता है। इसलिए ही उन्होंने इन अनुरागों को नीच सुख अनुराग का नाम दिया है।

इन सब नीच अनुरागों से ऊपर जो सबसे भयानक नीच अनुराग है, वह घमंड का प्रबल अधिकार है। इसके अधिकार से संसार का कोई भी जन बचा हुआ नहीं है, कुछ दर्जों का फर्क हो सकता है। साधारणत: ऊंचे बोलने को वा ग़ल्त व्यवहार को ही घमंड समझा जाता है, परन्तु इसकी तो बहुत सी शाखाएं है जैसे: –

प्रशंसा सुख अनुराग
मान सुख अनुराग
बड़ाई सुख अनुराग
स्वार्थ सुख अनुराग

**<u>प्रशंसा सुख अनुराग : –</u>** परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने पूजनीय देव शास्त्र – 3 में इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है : –

"प्रशंसा का अर्थ तारीफ व वाह वाह है। किसी और के मुंह से अपनी तारीफ वा वाह वाह के सुनने या किसी और के लेख में अपनी तारीफ के पढ़ने वा अपने मुंह वा लेख से भी <u>अपनी तारीफ के करने से जो सुख मिलता है, उस सुख की प्रबल लालसा को प्रशंसा सुख अनुराग कहते हैं।</u>"

प्रशंसा लालसा प्राय: सब मनुष्यों में पाई जाती है, इसका लाभ उठाकर स्वार्थी जन अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए दूसरे की झूठी प्रशंसा भी करते रहते हैं, प्रशंसा सुनने वाला सचमुच ही अपने आपको महान समझने लगता है।

केवल यही नहीं कि मनुष्य अपनी प्रशंसा का ही अनुरागी होता है बल्कि वह अपने साथ सम्बन्धित वस्तुओं, सम्बन्धियों की प्रशंसा सुनने का भी लालसी बनता जाता है। मनुष्य की इस कमज़ोरी को जानकर कितने जन झूठी प्रशंसा करके अपना मतलब निकालते हैं, वही जन उनकी पीठ के पीछे निन्दा करते देखे जाते हैं।

इससे भी आगे प्रशंसा अनुराग से नीच घृणा की भी उत्पति होती है। वास्तव में प्रत्येक सुख अनुराग की तृप्ति न होने पर नीच घृणा की उत्पत्ति होती है। भगवान देवात्मा की इस

विषय में देव वाणी है : –

"यदि तुम किसी प्रशंसा अनुरागी जन के सन्मुख कोई ऐसी सत्य बात भी कहो, कि जो उसकी प्रशंसा के विरुद्ध हो, तो वह उससे अपने हृदय में कष्ट लाभ करेगा, और इस कष्ट वा दुख के मिलने से उसके भीतर तुम्हारे प्रति घृणा भाव की उत्पत्ति हो जाएगी, और वह तुम से फटकर दूर हो जाएगा। यदि यह घृणा भाव उसमें और भी अधिक प्रबल रूप में उत्पन्न हो गया हो, तो वह तुम्हें मित्र के स्थान में शत्रु के रूप में देखेगा, और तुम्हारा द्वेषी वा शत्रु बनकर और विविध प्रकार से तुम्हारा आप अहित करके वा और किसी से कराके अपने इस नीच भाव की तृप्ति करेगा।"

अक्सर मनुष्य अपनी प्रशंसा सुनकर इस प्रकार अन्धा हो जाता है कि प्रशंसा करने वाले का पक्षपाती बन जाता है। पक्षपाती बनकर प्रशंसा करने वाले की ग़ल्त बात को न केवल ग़ल्त कहने का साहस नहीं करता बल्कि उसका हिमायती बनकर खड़ा हो जाता है। यहां तक कि माता पिता भी बच्चों की ग़ल्त बात को ग़ल्त कहने का साहस नहीं करते, ताकि वह उनको बुरा न समझें।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने देव वाणी के नोट में फरमाया है : –

"मनुष्य के भीतर यह प्रबल लालसा रहती है कि सब मुझे प्यार करें, मेरी इज्ज़त करें, मेरी तारीफ करें, मुझे अच्छा कहें। यदि किसी और जन की प्रशंसा हो, तो मुझ से कम, यदि किसी को प्यार किया जाए, तो मुझसे थोड़ा। किसी जन के भीतर इन बातों का जितना अधिक जाप रहता है, उतना ही वह अपनी किसी रुचि पर चोट लगने से, अधिक झुंझलाता है और अपने हितकर्ताओं से फटता है"

प्रशंसा अनुरागी जन कोई सेवा करके ललचाई नज़रों से देखता है कि मेरी ओर कोई देख रहा है या नहीं, मेरी प्रशंसा होगी कि नहीं। यदि कोई और प्रशंसा नहीं करता तो वह स्वयं किसी न किसी बहाने से अपनी सेवा को बताता है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने पूजनीय देव शास्त्र खण्ड – 3 में फरमाया है : –

"फलत: प्रशंसा अनुराग से प्रत्येक मनुष्य के लिए नेचर के आत्मिक जगत के अटल नियमानुसार जैसे नाना अवसरों में नाना प्रकार की मिथ्याओं की ओर गति करना अनिवार्य है, वैसे ही उसके लिए नाना अवसरों में एक वा दूसरे प्रकार की अन्य अशुभ – मूलक क्रियाएं करना भी अनिवार्य है।

प्रशंसा अनुराग का जितना अधिक अधिकार हम पर होगा, उतना ही हमारी चिन्ताएं और क्रियाएं भी दूषित होंगी। हमारी सेवा का फल भी दूषित होगा। इसलिए जहां तक सम्भव हो हम इस ओर अपना ध्यान फेर सकें, गुरू की ज्योति और शक्ति मिले और हमारा भला हो सके।

– सुरजीत बराड़

# मनुष्य जगत के साथ हमारा सम्बन्ध

मनुष्य जगत के साथ हमारा सम्बन्ध जन्म काल से है। हम गिनना चाहें तो भी इस जगत के किन 2 लोगों के हम उपकृत हैं, तो भी हम गिन नहीं सकते, परन्तु फिर भी मोटे तौर पर हम किन किन जनों के उपकृत हैं, उन्हें आजकल के दिनों में याद करके उनके लिए धन्यवादी हों। और जिन जिन के उपकारों के बदले में हम किसी के लिए कुछ कर सकते हैं, अभी करें। पिछले 1-2 वर्ष से मेरे नाती के बहुत उपकारी, यहां तक कि आज वह अमरीका में डाक्टर है, उसमें उस मेहरबान डाक्टर का बहुत बड़ा हाथ था। हम उनको बहुत अच्छा उपहार देकर सम्मान देना चाहते थे। परन्तु मेरी बेटी कहने लगी, बेटा आएगा तो उसको लेकर जाएँगे। कुछ दिन हुए पता लगा कि उस मेहरबान डाक्टर का देहांत हो गया है, मुझे इतना गहरा सदमा लगा कि मुझे अपने पर ही फटकार पड़ी। एक इतने बड़े उपकारी को कुछ न दे सके। हमने वह मौका खो दिया। इसलिए मुझे यह सबक मिला कि जो हितकर गति किसी उपकारी के लिए करना चाहते हैं, उसके लिए समय की इन्तज़ार न करें।

मनुष्य जगत में हमारे उपकारी हैं :-

माता पिता, बहन भाई, और सब सम्बन्धी । डाक्टर जिन्होंने कितनी बार हमें बिमारियों से बचाया हैं।

**इंजीनियर और आर्कीटैक्टः –** जिन्होंने नये से नये तरीकों से हमारे घरों को नया रूप दिया है।

**लेखकः –** जिन्होंने तरह 2 का साहित्य देकर हमारे ज्ञान को बढ़ाया है।

**अध्यापक :–** जिनकी कृपा से हम पढ़ने लिखने के योग्य हुए हैं।

**वैज्ञानिकः –** जिनकी खोजों ने हमारी जिन्दगी को इतना आराम दायक बना दिया, मोटर, गाड़ी, जहाज़ आदि का अविष्कार करके हमारे सफर को सुविधाजनक बना दिया ।

**किसान :–** जिन्होंने हमारे लिए कठिन परिश्रम करके अनाज, सब्जियां वा फल पैदा किए।

**संगीतकारः –** जिनके संगीत हमारा मनोरंजन करते हैं।

**कारीगरः –** जो घर बनाते हैं, फर्नीचर बनाते हैं।

**मजदूर :–** जो हमारे घरों को बनाने में कड़ी धूप में भी काम करते हैं। हमारे लिए घर बनाते हैं परन्तु स्वयं झोंपड़ियों में रहते हैं।

**हमारे उच्च कर्मचारी :–** जिनकी कृपा से हम सच्चे धर्म की दुनिया में सांस ले रहे हैं। उन्होंने गुरू के प्रभाव पहुँचा कर हमें पाप वा मिथ्या से बचाया है। हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण दिया है। हम बेसुधों को कुछ न कुछ आत्मा का ज्ञान दिया है।

**हमारे मित्र वा पड़ोसी :–** जो हमारे दुख सुख में आर्थिक रूप से मददगार होते हैं।

और कितने उपकारकर्ता, सहायताकर्ता, दुख-सुख के साथी रहे हैं, सबकी गिनती करनी कठिन है।

**हमारे सहायक :–** जो हमारे घरों में भिन्न भिन्न प्रकार की सेवा करके हमें सुविधा प्रदान करते हैं। कई लोग इस वहम में सहायकों की

शेष पृष्ठ 20 पर

# भगवान् देवात्मा का जन्मोत्सव निकट आ रहा है!

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में पाठ और विचार के दिन 27 नवम्बर से शुरू हो जाएंगे। परम पूजनीय भगवान का शुभ जन्म दिन 25 दिसम्बर से 28 दिसम्बर तक मनाया जाएगा, जिसका प्रोग्राम हर साल की तरह अलग से भेजा जाएगा।

यह जन्मोत्सव संसार - भर की सर्व - श्रेष्ठ घटना है, जिसमें सारे संसार का कल्याण निहित है। अधिकारी - आत्माओं के लिये आत्मिक - कल्याण का यह स्वर्ण - अवसर है। जीवन - दाता के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता प्रकट करके और हानि - परिशोध के साधनों में से गुजर कर सौभाग्यवान् आत्मा अपना - अपना कल्याण साधन कर सकेंगे।

इन मुबारक दिनों में पावन - ग्रन्थों का पाठ हो, भजनों का, देव - स्तोत्र का और देव - आरती का श्रद्धा - पूर्वक गान हो। रोज़ाना निज के साधन हों, साधन - कापियां लिखी जाएं। अधिकारी - आत्माओं को मिला जाए। प्रचार - केन्द्रों पर विशेष संग्राम हो। आत्माओं को इस पावन - अवसर से लाभ उठाने के लिये तैयार किया जाए। चारों तरफ़ भगवान देवात्मा की महिमा का बख़ान हो। साथियो! चारों तरफ़ एक धूम मचा दें।

जन्मोत्सव पर आने की, अभी से तैयारी शुरू की जाए। नए वस्त्र सिलाए जाएं। इस अवसर पर भेंट आदि देने की विशेष तैयारियां की जाएं। बच्चों को भगवान देवात्मा की जीवन कथाएं और भजन याद कराए जाएं। जिनको कहीं से छुट्टी लेनी हो, उसका अभी से प्रबन्ध किया जाए।

हम सब का एक तजुरबा है कि इस अवसर पर जो यहां दान मिलता है, वह आने वाले सारे साल में अपना असर दिखाता है। और इसलिए इस पावन - अवसर पर शामिल होना हमारी पाक प्रतिज्ञा भी है। साथियो! आज के हालात हम से यह मांग करते हैं कि हम अपने अपने जीवनों को उन्नत करें। इस समय सब के लिए बड़ी चुनौती है। इस अवसर की इस सफलता पर हम सब की काया - कल्प निर्भर करती है।

आप के साथी अभी से नाना प्रकार की तैयारियों में डट गए है और पूरा संग्राम करके अवसर को सफल करने को दृढ़ संकल्प हैं। हर तरफ़ एक पाक नज़ारा हो। एक पाक जोश हो, एक नई क्रान्ति का आरम्भ हो।

सभाओं का तो क्या बताएं। एक से एक बढ़कर सभा होगी। सत्गुरु के आर्विभाव, उनके पाक सम्बन्ध उनके अद्वितीय त्यागों और कारज का वर्णन होगा। पब्लिक - लैक्चर होंगे। बच्चों की सभा होगी और नाना दूसरे प्रोग्राम होंगे। प्रात: सूर्य निकलने के समय कीर्तन होगा। बैण्ड - बाजा होगा और शुभ - कामना होगी।

वक्त आने पर बता देंगे, हम तुम्हें ऐ मेहर - बान
हम अभी से क्या बतायें, क्या हमारे दिल में है।

आओ! प्रण करें, महोत्सव पर जरूर चलना है औरों को भी तैयार करना है। हर तरफ एक ही आवाज़ हो।

"गुरू के जन्म - महोत्सव पर पूरे जोश से चलें।"

प्रार्थी, सुरजीत बराड़

*Published on 5th of the month*

*Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023*
*Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88*

**पृष्ठ 18 का बाकि**

कदर नहीं करते कि हम पैसे देते हैं, तो यह काम करते हैं। परन्तु पैसे न हमारा खाना बना सकते हैं, न घर साफ वा अन्य काम कर सकते हैं। पैसे लेकर भी कोई हमारी सेवा करता है, तो वह हमारा उपकारी है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा फरमाते है: -

"मनुष्य मात्र चाहे वह किसी देश के हों, किसी जाति के हों, किसी संप्रदाय वा मत के हों, किसी रंग वा रूप के हों, कोई भाषा बोलते हों, कैसे ही उनके आचरण हों, उनके साथ हम बन्धे हुए हैं। उन सबके साथ हमारा सम्बन्ध है।"

यदि यह बात देश विदेश के महारथियों को समझ आ जाए तो आज सब युद्ध खत्म हो जाएं, निर्दोषों की हत्याएं समाप्त हो जाए, कोई बलात्कार न हों, घृणा द्वेष का राज खत्म हो जाए। विश्व में शान्ति का राज्य आ जाए। धर्म युद्ध खत्म हो जाएं। परम पूजनीय भगवान की शिक्षा इतने ऊँचे दर्जे की है कि औरों को तो क्या समझ आनी थी, हम गुरू के शिष्य होकर भी नहीं समझ सके। थोड़ी सी कोई ईच्छा पूरी न होने पर हम अपने ही साथी सेवकों से दूरी बना लेते हैं। काश! कम से कम हम एक जुट होकर गुरू महाराज के मिशन को आगे ले जा सकें और धूमधाम से गुरू का जन्म दिन मना सकें।

भला चाहना मनुष्य मात्र का ऐ इन्सान वाजिब है,
किसी की तू न $\frac{\text{चाह}}{\text{कर}}$ हानि, नहीं नुकसान वाजिब है।1

वह हिन्दु हो, मुस्लमां हो, यहूदी हो या ईसाई,
ब्रह्मों,आर्य्या,सिक्ख का उचित सम्मान वाजिब है।2

वह रूमी हो या रूसी हो, वह चीनी हो या जापानी,
फ़रंगी एशियाई हो या अफ़रीकी या अमरीकी,
$\frac{\text{कहीं का हो कोई भी हो, उचित एहसान}}{\text{नसल और रंग के कारण नहीं अपमान}}$ वाजिब है। 3

ग़लत जाता हो गर कोई धर्म मार्ग से भूला हो,
मोहब्बत से उसे देना धर्म का ज्ञान वाजिब है। 4

किसी मतभेद को लेकर कदूरत नफरतो नख़्वत,
ताआसुब तंग दिली कीना नहीं नुक़सान वाजिब है। 5

मनुष्य मात्र के रिश्तों में जो सद्शिक्षा दी भगवन ने,
दिए आदेश जो हितकर पालना उनका वाजिब है। 6

-सुरजीत बराड़

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने* ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

**Book Posts**